25

मोक्ष

प्रस्तावना

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, चार पुरूषार्थ हैं। उनमें मोक्ष परमपुरूषार्थ है। मोक्ष नित्य है, अत एव वह परम पुरूषार्थ है। मोक्ष को उद्देश्य करके ही अद्वैत वेदान्त शास्त्र द्वारा आत्मस्वरूप ब्रह्म जाना जाता है और साधन विधीत हैं। साधनों का यथायथम् अनुष्ठान जो करता है, वही मोक्ष रूपी फल प्राप्त करता है। मोक्ष क्या है, मोक्ष प्राप्ति के प्रति वेदान्त शास्त्र में बोधित साधन क्या हैं, इस पाठ में विशेष विचार किया जा रहा है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- अद्वैत वेदान्त शास्त्र का क्या प्रयोजन है, यह जान पाने में;
- अद्वैत वेदान्त मत में मोक्ष क्या है, यह जान पाने में;
- मोक्ष नित्य कैसे है, यह जान पाने में;
- अद्वैत वेदान्त दर्शन में ''ज्ञानेन एव मोक्षः भवति'', इस सिद्धान्त को स्वीकार करने मं क्या कारण है, यह जान पाने में;
- मोक्ष का साक्षात् साधन ब्रह्म ज्ञान ही है, ऐसा जान पाने में;
- ब्रह्म ज्ञान से व्यतिरिक्त मोक्ष साधन कैसे हैं, यह जान पाने में;
- ब्रह्म ज्ञान की उत्पत्ति के प्रति साधन क्या है, यह जान पाने में।

25.1 वेदान्त शास्त्र कैसे अध्येतव्य है

जिसका साधन चतुष्टय विद्यमान होता है, वही व्यक्ति वेदान्त शास्त्र में अधिकारी है, ऐसा पूर्व में ही हमारे द्वारा ज्ञात है। वही वेदान्त शास्त्र का तात्पर्य समझने में समर्थ है, ऐसा अर्थ है। साधन-चतुष्टय सम्पन्न व्यक्ति जब वेदान्त शास्त्र को सुनता है तब वह वेदान्त वाक्यों का तात्पर्यभूत ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। उसके मन में ब्रह्मविद्या उदित होती है, ऐसा अर्थ है। और ब्रह्मविद्या से मोक्ष होता है। इस प्रकार साधन चतुष्टय से युक्त साधक वेदान्तशास्त्र के श्रवण से अन्त में मोक्ष ही प्राप्त करता है। अतः यह मोक्ष वेदान्तशास्त्र का प्रयोजन होता है। आत्यान्तिक रूप से सभी प्रकार के दुःखों की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति मोक्ष पद से कही जाती है।

वेदान्तशास्त्र उपनिषदों की मीमांसा है। उपनिषद् ही वेदान्त कहा जाता है। मीमांसा का अर्थ विचार है। वेदान्त शास्त्र में आचार्य उपनिषदों के तात्पर्य के विषय में मीमांसा करते हैं। आचार्यों के द्वारा क्या उद्देश्य करके उपनिषद् तात्पर्य मीमांसा की जाती है? ''साध न चतुष्टय सम्पन्न यह शास्त्र को पढ़कर उपनिषदों का तात्पर्य समझें, इस उद्देश्य से वेदान्ताचार्य उपनिषद् की मीमांसा करते हैं। किस प्रयोजन को उद्देश्य करके साधन चतुष्टय सम्पन्न व्यक्ति उपनिषदों के तात्पर्य को जानने की इच्छा करता है? कहा जाता है- वह मोक्ष रूप प्रयोजन को उद्देश्य करके उपनिषद् के तात्पर्य को जानने की इच्छा करता है।

जैसे ही साधन चतुष्टय सम्पन्न व्यक्ति मुमुक्षु होता है। अर्थात् वह मोक्ष की इच्छा करता है। जो बद्ध है, वह ''अहं बद्धः अस्मि'', ऐसा जानकर उस बन्धन से स्वयं के मोक्ष की इच्छा करे। साधन चतुष्टय सम्पन्न व्यक्ति संसार रूप बन्धन से मोक्ष की इच्छा करता है। जिससे वह संसार से मोक्ष की अभिलाषा करता है वह संसार के विषय में पहले ही जानता है। जन्म, मरण आदि चक्र ही संसार कहलाता है। यह दुःखमय है। आत्म के स्वरूप के विषय में जो अज्ञान है, उसके द्वारा संसार उत्पन्न होता है। नित्य सुखात्मक ब्रह्म ही आत्मा का स्वरूप है, ऐसा उपनिषदों में बोधित है। आत्मा ब्रह्म ही है, ऐसा स्वयं अनुभूत करके महात्मा भी वह हमें बताते हैं। यह आत्मा-ब्रह्म का अभेद है अथवा आत्मा का अद्वैत है, हम नहीं जानते है। अतः हमारा आत्मस्वरूप विषय में अथवा अद्वैत के विषय में अज्ञान है। अज्ञान से ही दुःख अनुभव करते हैं।

अज्ञान से दुःख कैसे होता है? कहा जाता है- यह सम्पूर्ण जगत् वस्तुतः आत्मस्वरूप ब्रह्म ही है। ब्रह्म ही जगत् रूप में दिखता है। हमारे आत्मस्वरूप से भिन्न कोई भी व्यक्ति नहीं है, भिन्न कोई भी वस्तु नहीं है। यह ज्ञान ही अद्वैत दर्शन है। उपनिषद् इस अद्वैत का बोध कराता है। किन्तु हम अद्वैत को नहीं जानते हैं। इस अज्ञान के कारण हम द्वैत को अनुभव करते हैं। यह द्वैत क्या है? 'अहं, त्वम्, इदं तत्, अत्र तत्र, इदानीं तदानीम्, अन्तः बहिः, अयं लोकः परलोकः, जीवः जगदीश्वरः'', इत्यादि रूप में हमारे द्वारा जो अनुभूत होता है वही द्वैत है। अखिल जगत् ही द्वैत है। इस द्वैत

से काम, लोभ, मोह, भय, दु:ख इत्यादि उत्पन्न होते हैं। काम से हम विषयोपभोगों में प्रवृत्त होते हैं। भय आदि से हम विषयों से निवृत्त होते हैं। प्रवृत्तिरूप और निवृत्तिरूप सभी कर्म कहलाते हैं। साधु कर्म से पुण्य उत्पन्न होता है और असाधु कर्म से पाप। कर्मों के द्वारा सञ्चित पुण्य और पाप के उपभोग के लिए हम शरीर से शरीरान्तर को जाते हैं। इस प्रकार जन्म, जरा, मरण इत्यादि रूप संसार उत्पन्न होता है। संसार में हम महान दु:ख अनुभव करते हैं। इस संसार के दु:ख का हेतु अविद्य, काम, कर्म, ये तीन हैं। संसार का हेतु कर्म, उसका हेतु काम, और उसका हेतु अविद्या अथवा अज्ञान है। इस प्रकार अज्ञान से संसार रूपी दु:ख होता है।

संसार रूप दु:ख का मूल कारण यह आत्मस्वरूपविषयक अज्ञान होता है। वह किस कारण से? आत्मस्वरूप अद्वैत के विषय में हमारा ज्ञान नहीं है, इस कारण से संसार रूप दु:ख उत्पन्न होता है। उस आत्मस्वरूप विषयक अज्ञान से ही संसार उत्पन्न है, ऐसा जाना जाता है। आत्मस्वरूप के ज्ञान से वह अज्ञान निवृत्त होता है। अत: संसार की निवृत्ति आत्मस्वरूप के ज्ञान से होती है। संसार से निवृत्ति ही मोक्ष कही जाती है। उसके कारण जो मोक्ष की इच्छा करता है वह आत्मस्वरूप को जान लेता है। आत्मा का स्वरूप जो ब्रह्म है वह उपनिषदों में तात्पर्यत: बोधित है। अत एव साधन-चतुष्टय सम्पन्न व्यक्ति उपनिषदों का तात्पर्य जानने हेतु इच्छित होता है। उस तात्पर्य के सुख से अवगमन के लिये ही उत्तरमीमांसा रूपी वेदान्तशास्त्र आचार्यों द्वारा प्रवर्तित हुआ। मीमांसा द्वारा उपनिषदों का तात्पर्यभूत ब्रह्म जब साधक के द्वारा जाना जाता है तब वह मोक्ष को प्राप्त करता है। उससे मोक्ष को उद्देश्य करके साधकों के द्वारा उपनिषद् मीमांसा रूप वेदान्तशास्त्र का अध्ययन करना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 25.1

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये गए हैं।

1. संसार क्या है और उसका क्या करण है?
2. संसार की निवृत्ति कैसे होती है?
3. वेदान्तशास्त्र किस लिए प्रवृत्त हुआ?
4. साधन चतुष्टय सम्पन्न ही वेदान्तशास्त्र में अधिकारी है, ऐसा किस कारण से कहा जाता है?

25.2 मोक्ष का स्वरूप

साधन चतुष्टय सम्पन्न साधक वेदान्त शास्त्र के अध्ययन से उपनिषदों का तात्पर्य विचार करके ब्रह्मविद्या द्वारा मोक्ष प्राप्त करता है, ऐसा ज्ञात है। यह मोक्ष क्या है? मोक्ष नित्य, निरतिशय आनन्द की संज्ञा है।

संसार में सभी जन्तु आनन्द की ही इच्छा करते हैं। कोई भी प्राणी दु:ख की इच्छा नहीं करता है। अत एव दु:ख के परिहार के लिए और सुख की प्राप्ति के लिये प्राणी यत्न करते हैं। उन यत्नमानों में कुछ पुण्य कर्मों के द्वारा विषय सुख को प्राप्त करते हैं। किन्तु कर्मों के द्वारा सम्पादित वह सुख अनित्य और सातिशय होता है। जब तक पुण्य कर्मों का फल रहता है, उस काल तक वैषयिक सुख प्राप्त होता है। पुण्य कर्म के क्षीण होने पर वह सुख नष्ट हो जाता है और दु:ख पुन: आ जाता है। उसके कारण पुण्यकर्मों से प्राप्त वैषयिक सुख अनित्य है। और वह सुख अत्यन्त उत्कृष्ट नहीं है। पुण्यकर्म जब तक उत्कृष्ट होता है, तब तक उससे उत्पन्न वैषयिक सुख भी उत्कृष्ट होता है। मनुष्य लोक में जो सुख है, उससे भी उत्कर्ष अथवा अतिशय गन्धर्व लोक के सुख का होता है। उससे भी अतिशय स्वर्गलोक में प्राप्त सुख का है। उससे भी अतिशय वैकुण्ठ लोक में लभ्यमान सुख का है। उससे पुण्यकर्मों के द्वारा प्राप्त सुख सातिशय भी होता है।

कर्मों से प्राप्त सुख किस कारण से अनित्य और सातिशय होता है? इस प्रश्न का समाधान यह है- कर्मों के द्वारा उपलब्ध सुख वैषयिक होता है। इस वैषयिक का अर्थ विषय सम्बद्ध है। विषय आत्मभिन्न पदार्थ हैं। आत्मा तो कभी भी विषय नहीं है। वह सर्वदा विषयी ही है। आत्मा से सभी पदार्थ विषयीकृत अथवा जाने जाते हैं। उसके कारण आत्मा विषयी और आत्म भिन्न सभी पदार्थ उसके विषय हैं। विषयी आत्मा ही वस्तुत: सभी के सुख का मूल है। नित्य और निरतिशय सुख ही वस्तुत: आत्मा कहलाता है। अत एव उपनिषद् आत्मा को आनन्द स्वरूप कहते हैं। आत्मा में ही सभी सुख निहित है तो आत्मा-भिन्न पदार्थों और विषयों में सुख है, ऐसा लोक में जीव चिन्तन करने से भ्रान्त हैं। सुख स्वरूप आत्मा का ज्ञान उन्हें नहीं है, इस कारण से ही वे इस प्रकार व्यवहार करते हैं। उसके कारण जो नित्य और निरतिशय आनन्द प्राप्त करने का इच्छुक होता है, वह आत्मा को जानें। और आत्म ज्ञान से आत्मस्वरूप और नित्य-निरतिशय सुख का अनुभव किया जा सकता है। इस सुख में दु:ख का लव लेश भी नहीं होता है। जन्म, जरा, मरण आदि रूप संसार में उपलब्ध होने वाला सुख अनित्य और सातिशय होता है, पुन: दु:ख मिश्रित होता है। वह संसार नित्य और निरतिशय होने पर और सुख-प्राप्त होने पर निवृत्त होता है एवं आत्म-ज्ञान द्वारा आत्मस्वरूप की, नित्य-निरतिशय सुख की प्राप्ति और संसार की निवृत्ति अद्वैत वेदान्तशास्त्र में मोक्ष अथवा मुक्ति कही जाती है। यह मोक्ष ही वेदान्तशास्त्र का प्रयोजन हैं

पाठगत प्रश्न 25.2

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये गये हैं-

1. मोक्ष क्या है?
2. वैषयिक आनन्द से आत्मस्वरूप आनन्द का क्या भेद है?
3. मोक्ष कैसे प्राप्त होता है?

25.3 निवृत्त की निवृत्ति और प्राप्त की प्राप्ति

हमारी आत्मा सदैव ब्रह्म ही है, अत: हम वस्तुत: सदा संसार से मुक्त ही होते हैं। उसके कारण वस्तुत: हमारा संसार सदा निवृत्त ही होता है, नित्य-निरतिशय और ब्रह्मानन्द सदा प्राप्त ही होता है। तथापि आत्मस्वरूप विषयक भ्रान्ति द्वारा संसार निवृत्त ही है और ब्रह्मानन्द प्राप्त ही है, ऐसा हम नहीं जानते हैं। जब ब्रह्मविद्या द्वारा वह भ्रान्ति समाप्त होती है तब निवृत्त संसार ही निवृत्त होता है और प्राप्त ब्रह्मानन्द ही प्राप्त होता है, ऐसा अनुभूत है। और जब मोक्ष होता है तब निवृत्त संसार रूप दु:ख की निवृत्ति होती है और प्राप्त परमानन्द की ही प्राप्ति होती है।

यहाँ कुछ संशय उदित होते हैं- निवृत्त की निवृत्ति कैसे होती है, और प्राप्त की प्राप्ति कैसे संभव है? कहा जाता है - निवृत्त की निवृत्ति रज्जु सर्प न्याय द्वारा सम्भव होती है और प्राप्त की प्राप्ति कंठचामीकर न्याय के द्वारा होती है।

जैसे किसी मार्ग पर एक रस्सी पड़ी थी। सांयकाल का मन्द अन्धकार था। किसी वृद्ध ने बाजार से गृह की ओर जाते हुए उस रस्सी को दूर से देखकर सर्प माना। अरे यह सर्प है, इस आक्रोश से वह अति भयभीत होकर वहाँ से दूर जाकर स्थित हुआ। उसके शरीर पर स्वेद (पसीना) उत्पन्न हुआ। कम्पन भी आरम्भ हुआ। तब कोई बालक वहाँ आया। उसने पूर्व में उस मार्ग से कीड़ा रेंगते जाते हुए वहाँ रस्सी को देखा था। उसके कारण अब अन्धकार में भी, वहाँ रस्सी ही है, ऐसा उसने जाना। भयाक्रान्त वृद्ध को देखकर बालक ने पूछा- आप किस कारण से भयभीत और कम्पित हैं? वृद्ध ने रज्जु को देखकर कहा- हे कुमार! वहाँ देखो, अतिघोर विषधर कोई सर्प मेरी मृत्यु के समान वहाँ सोया है। यह सुनकर बालक ने हँसकर वृद्ध का हस्त ग्रहण करके उसको रज्जु के निकट लाकर कहा- आप देखें, यह सर्प नहीं है, अपितु रस्सी है। एकाग्रता से कुछ काल तक अवलोक करके वृद्ध ने ''वह रज्जु ही है', ऐसा निश्चित करके बालक को कहा- अब मुझे शान्ति हुई, वह सर्प निवृत्त हुआ।

वस्तुत: सर्प पूर्व में ही निवृत्त था। तथापि वह अनिवृत्त है, ऐसी वृद्ध की भ्रान्ति थी। रज्जु ज्ञान से जब वह भ्रान्ति समाप्त हुई तब निवृत्त सर्प की ही निवृत्ति हुई। यह दृष्टान्त रज्जु-सर्प न्याय कहलाता है। रज्जु-सर्प न्याय से यह सिद्ध होता है- निवृत्त की भी निवृत्ति होती है। उससे ब्रह्मविद्या के द्वारा जब ब्रह्मविषयी अविद्या समाप्त होती है, तब निवृत्त ही संसार रूपी दु:ख की निवृत्ति होती है।

चामीकर (कण्ठाहार) नामक कण्ठ में पहना जाने वाला कोई स्वर्ण निर्मित आभूषण होता है। एक बार कोई महिला उत्सव देखने हेतु जाती है, ऐसा निश्चित करके वेशाभूषण आदि द्वारा स्वयं को अलंकृत करने हेतु प्रवृत्त हुई। स्वर्णाभरणों की पेटिका को जब खोला तब उसने वहाँ अतिमूल्यवान चामीकर को नहीं देखा। खेद से उसने आक्रोश करना प्रारम्भ किया। हा हन्त, मेरे चामीकर कहाँ गए, ऐसा उच्च स्वर में विलाप करती वह

घर के अन्दर और बाहर सभी जगह चामीकर के अन्वेषण में व्याकुल हुई। गृह के समक्ष आंगन में जब वह चामीकर के अन्वेषण में निरत थी तब विद्यालय से गृह आते हुए कोई बालक उसका विलाप सुनकर समीप आया। उसने उससे पूछा- आप इस प्रकार विलाप करती हुई कौन सी वस्तु ढूँढ रही हैं? उस महिला ने नष्ट चामीकर के विषय में उसे कहा। तब वह बालक मृदु हँसकर अङ्गुली से महिला के कण्ठ की ओर निर्देश करके उसको कहा- अयि भद्रे! वह चामीकर आपके कण्ठ में विराजमान है। आश्चर्य पूर्वक महिला ने स्वयं के कण्ठ को स्पर्श करके चामीकर को वहीं अनुभूत किया। वह आनन्द से बालक का मिष्ठान्न देकर बोली- तुम्हारे वचन से मैंने नष्ट चामीकर को पुनः प्राप्त किया। (वस्तुतः) चामीकर सर्वदा महिला के कण्ठ में ही विराजमान था। उसके कारण वह चामीकर सदा प्राप्त ही था। भ्रम के कारण उसने (महिला) उसको अप्राप्त माना। जब ज्ञान के द्वारा भ्रम समाप्त हुआ तब प्राप्त चामीकर की ही प्राप्ति हुई। यह दृष्टान्त कण्ठ-चामीकर न्याय कहा जाता है। कण्ठ-चामीकर न्याय से यह सिद्ध होता है- प्राप्त की ही प्राप्ति होती है। उससे जब ब्रह्म ज्ञान के द्वारा ब्रह्म-विषयक अज्ञान दूर होता है, तब प्राप्त परमानन्द ही प्राप्त होता है।

आत्यन्तिक रूप से संसार रूपी दुःख की निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति मोक्ष कहलाता है। रज्जु-सर्प न्यास से निवृत्त की ही निवृत्ति और कण्ठ-चामीकर न्याय से प्राप्त की ही प्राप्ति मोक्ष होता है, अतः मोक्ष नित्य है, ऐसा जानते हैं।

पाठगत प्रश्न 25.3

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये गए हैं।

1. निवृत्त की भी निवृत्ति सम्भव होती है, ऐसा दृष्टान्त के द्वारा प्रदर्शित करें (अथवा रज्जु सर्प न्याय के द्वारा विवरण दें)
2. प्राप्त की भी प्राप्ति होती है, ऐसा दृष्टान्त के द्वारा प्रदर्शित करें (अथवा कण्ठ चामीकर न्याय का वर्णन करें)
3. मोक्ष नित्य है, ऐसा कैसे जाना जाता है?
4. मोक्ष नित्य है तो हम बद्ध कैसे हैं?

25.4 मोक्ष का साक्षात् साधन ज्ञान ही है

मोक्ष नित्य है, ऐसा हमारे द्वारा ज्ञात है। नित्य है, इस कारण से मोक्ष ज्ञान के द्वारा ही हो सकता है। आत्मा का स्वरूप ब्रह्म ही है, हमारा ऐसा ज्ञान नहीं है, इस कारण से हम जन्म-मरण के चक्र में बद्ध होते हैं। वस्तुतः हम सभी की आत्मा सर्वदा ब्रह्म ही है। अत एव वस्तुतः हम मुक्त ही हैं। तथापि हमारा उस प्रकार का ज्ञान नहीं है,

टिप्पणी

अत एव हम बद्ध हैं। उसके कारण मुक्ति नित्य है, वह अज्ञान से आच्छादित होती है। आत्मा ब्रह्म ही है, यह ज्ञान जब प्राप्त हो तब वह अज्ञान नष्ट होता है, और हम हमारे नित्य, मुक्त स्वभाव को अनुभव करते हैं। उस ब्रह्म-ज्ञान से अथवा ब्रह्मविद्या के द्वारा ही मोक्षज्ञ सिद्ध होता है। ब्रह्मविद्या से उत्पन्न अविद्या की निवृत्ति और परमानन्द प्राप्ति मोक्ष कहलाता है। जिसके कारण ब्रह्मज्ञान से ही मोक्ष होता है, उससे ब्रह्म ज्ञान ही मोक्ष साक्षात् साधन है।

अत एव श्रीशंकरभगवतपाद ने विवेकचूड़ामणि में कहा है- आत्मैक्यबोधेन विना विमुक्तिर्न लभ्यते जन्मशतान्तरिऽपि इति। आत्मा एक, अद्वैत है, ऐसा जो बोध है, वही आत्मैक्य बोध है। वही ब्रह्मविद्या है। इस ब्रह्मविद्या के बिना मुक्ति सौ जन्मों में भी प्राप्त नहीं होती, ऐसा अर्थ है।

ज्ञान से ही मोक्ष होता है, ऐसा अद्वैतवेदान्त दर्शन के आचार्यों ने हमें पुनः पुनः स्मरण कराया है। मुमुक्षु द्वारा उससे आत्मज्ञान ही सम्पादनीय है। आत्मा का यथार्थ स्वरूप ब्रह्म उपनिषदों में बोधित है। उसके कारण आत्मज्ञान के लिए उपनिषद् का अर्थ ज्ञेय है। उस अर्थ के निर्णय के लिए उपनिषद्-मीमांसा रूप अद्वैत वेदान्त शास्त्र प्रवृत्त हुआ। सच्चिदानन्द स्वरूप ब्रह्म ही आत्म का वास्तविक स्वरूप है, ऐसा उपनिषद् के आख्यान द्वारा वेदान्तशास्त्र में आचार्यों के द्वारा निर्णीत है। उसके कारण ब्रह्मविद्या से ही मोक्ष होता है। ब्रह्म ही हम सब की आत्मा है। अतः ब्रह्मविद्या के द्वारा हम हमारे आत्मा का स्वरूप ही जानेंगे। आत्मस्वरूप ब्रह्म के ज्ञान के द्वारा ही ब्रह्म अभिन्न नित्य, निरतिशय आनन्द को प्राप्त करें। ब्रह्म स्वरूपभूत यह आनन्द निखिल दुःख विवर्जित है। उसके कारण ब्रह्मानन्द प्राप्ति में दुःखमय संसार नष्ट होता है। एवं जब हमारे द्वारा ब्रह्मविद्या प्राप्त होती है, तब हम निवृत्त निखिल दुःख आत्मानन्द को अनुभव करते हैं, संसार रूपी जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 25.4

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये गए हैं-

1. ज्ञान से ही मोक्ष होता है, ऐसा किस कारण से कहा जाता है?
2. मुमुक्षु द्वारा ज्ञान कहाँ से प्राप्त हो सकता है?
3. ज्ञान से जो मुक्त है वह क्या अनुभव करता है?

25.5 ज्ञान के अतिरिक्त मोक्ष साधन किस लिए हैं?

ब्रह्म-ज्ञान के अतिरिक्त भी बहुविध मोक्ष-साधन कर्म-योग आदि शास्त्रों में सुने जाते हैं। वे ब्रह्म-ज्ञान की उत्पत्ति के लिए होते हैं।

जो वस्तु सर्वदा प्राप्त ही है उसकी प्राप्ति के लिये कुछ भी करना नहीं चाहिए। नित्य प्राप्त वस्तु के विषय में यह वस्तु मेरी नहीं है, प्रयत्न से यह मेरे द्वारा प्राप्तव्य है, ऐसा जो भ्रम है, उसका निवारण केवल ज्ञान से ही होता है। प्राप्त की भी अप्राप्ति रूप से भ्रान्ति का निवर्तक ही ज्ञान है। उससे जब साध्य सर्वदा साधक का सिद्ध होता है तब उसकी अप्राप्ति साध्य-विषयक अज्ञान के द्वारा ही हो, और पुनः प्राप्ति ज्ञान से होती है। आत्मा तीनों कालों में भी ब्रह्म ही है, अतः मोक्ष सभी प्राणियों का वस्तुतः सिद्ध ही है। तथापि ब्रह्मविषयक अज्ञान के कारण 'अहं न मुक्तः, अपितु संसारे बद्धः एव'' ऐसा जीव द्वारा चिन्तन किया जाता है। अतः ब्रह्मज्ञान से, संसार से मुक्ति होती है। सभी को आत्मत्व से नित्य सिद्ध, ब्रह्म का ज्ञान ही हमारे द्वारा ब्रह्मविद्या, अखण्डाकारवृत्ति, ब्रह्मानुभव इत्यादि शब्दों के द्वारा भी कहा जाता है। और मोक्षज्ञ ब्रह्मविद्या को ही अपेक्षित है, न की कर्मोपासना, योग, समाधि आदि को। एवं यदि ब्रह्म विद्या से ही मोक्ष होता है, तभी मोक्ष का उपाय अथवा साधन केवल ब्रह्मविद्या होगी। कर्मयोग, भक्तियोग, इन्द्रिय निग्रह, ध्यान इत्यादि मोक्ष साधन नहीं होंगे। और उस कर्म आदि की अत्यन्त अनुपयोगिता ही आध्यात्म मार्ग में प्राप्त होती है। किन्तु ऐसा नहीं होता है। कर्म, योग आदि श्रवण, मनन, निदिध्यासन पर्यन्त मोक्ष के साधन हैं, ऐसा वेदान्तशास्त्र में आचार्यों के द्वारा उपदिष्ट है। उसके कारण संशय है- ब्रह्मज्ञान से अतिरिक्त कर्मयोग आदि साधन कैसे मोक्ष-साध न होते हैं?

कहा जाता है- संसार-कारण अज्ञान का निवारक ब्रह्मज्ञान ही होता है तो भी उस ब्रह्मज्ञान के उत्पत्ति के लिये अन्य साधन आवश्यक होते हैं। जैसे- ब्रह्मविद्या अथवा अखण्डाकारवृत्ति कलुषित अन्तः करण में उदित नहीं होती है। शुद्ध अन्तःकरण ही उसमें सर्वदा प्रतिबिम्बित ब्रह्म के अनुभव में समर्थ होता है। बहिर्मुखता, कर्मवासना, काम, क्रोध, लोभ इत्यादि मलों के द्वारा हमारा अन्तःकरण कलुषित होता है। इन मलों के निवारण के लिए कर्मयोग, उपासना इत्यादि साधन आवश्यक हैं। कर्मयोग-साधनों के द्वारा शुद्ध अन्तःकरण युक्त जो साधक है, वह ही गुरू उपदिष्ट वेदान्त वाक्य का तात्पर्य जानता है। कर्मयोग आदि साधनों के निरन्तर अनुष्ठान से शुद्ध अन्तःकरण में ब्रह्मविद्या गुरूपदिष्ट, ब्रह्मबोधक वेदान्त वाक्यों श्रवण, मनन, निदिध्यासन के द्वारा उत्पन्न होती है। यह ब्रह्मानुभव ही ब्रह्मविद्या अथवा अखण्डाकारवृत्ति कहलाती है। इस प्रकार शास्त्र में प्रोक्त ब्रह्म ज्ञान के अतिरिक्त सभी साधनों का प्रयोजन यही है- मोक्ष सम्पादिका ब्रह्मविद्या के प्रमाणवृत्ति के आश्रयभूत जो अन्तःकरण है उसमें स्थित मलों के निवर्तन पूर्वक ब्रह्म-विद्या का उत्पादन। अतः ब्रह्म-ज्ञान के अतिरिक्त सभी मोक्ष-साधन ब्रह्म-ज्ञान की उत्पत्ति के लिये होते हैं, ऐसा सिद्ध है।

वास्तविक मोक्ष-साधन ब्रह्मविद्या ही है, ऐसा निश्चित है, अतः ब्रह्म विद्या ही मोक्ष है, इस प्रकार आचार्य ब्रह्मविद्या की स्तुति करते हैं। उस मोक्षरूप ब्रह्मविद्या के जो साध न हैं, वे भी मोक्ष-साधन ही है, ऐसा युक्त है। शास्त्र में प्रायः मोक्ष-साधन, इस शब्द से ब्रह्मविद्या की उत्पत्ति के लिये जो साधन अपेक्षित है, वे निर्दिष्ट हैं। उसके कारण जहाँ विशेषतया मोक्ष-साधनों का विचार कर्तव्य होता है वहाँ हम ब्रह्मविद्या की उत्पत्ति के लिये जो साधन कर्मयोग आदि होते है, उनका भी विचार करते हैं।

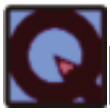

पाठगत प्रश्न 25.5

टिप्पणी

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये जा रहे हैं-

279. मोक्ष के साक्षात् साधन क्या हैं?

280. ब्रह्म ज्ञान अतिरिक्त साधन क्यों होते हैं?

25.6 ज्ञानोत्पत्ति के साधन और उनका त्रैविध्य

ब्रह्मज्ञान से ही मोक्ष होता है, यह सिद्ध ही है। अतः मोक्ष के साधनों का विचार करने पर अद्वैतवेदान्त शास्त्र में प्रायः ब्रह्म-ज्ञान की उत्पत्ति के प्रति जो साधन होते हैं, वे ही आलोचित हैं।

जो ब्रह्मविद्या-उत्पत्ति के साधन, मोक्ष साधन हैं, वे तीन प्रकार के होते हैं। वे हैं- अन्तरंग साधन, सहकारी साधन और परम्परा साधन।

जिस कारण से भी साधा जाता है, वही साधन कहलाता है। जहाँ वस्त्र साध्य होता है, वहाँ वस्त्र निर्माण के मुख्य साधन तन्तु होते हैं। उसके कारण तन्तु वस्त्र के प्रति अन्तरंग साधन होते हैं। किन्तु केवल तन्तुओं के द्वारा तन्तुवाय वस्त्र का निर्माण नहीं कर सकता अपितु वह तन्तुओं के साथ तुरी, वेमा इत्यादि वस्तुओं का भी उपयोग करता है। तन्तुओं के द्वारा वस्त्र-निर्माण के कार्य में तुरी, वेमा इत्यादि तन्तुवाय को सहायता करते हैं, ऐसा अर्थ है। उससे वस्त्र के प्रति तुरी, वेमा आदि सहकारी होते हैं। और वह सहकारी साधन तन्तुवाय साधन के समीप में स्वयं ही नहीं आते अपितु काष्ठों और अन्य उपकरणों के द्वारा श्रमपूर्वक वह निर्मित होते हैं। तुरी वेमा आदि सहकारी साधन का साधन काष्ठ आदि है, ऐसा अर्थ है। उसके कारण काष्ठ आदि वस्त्र के प्रति परम्परा साधन होता है। इस प्रकार तन्तुवाय वस्त्र को साधने के लिए प्रथम वस्त्र के परम्परा साधन काष्ठ आदि को संकलित करता है। तत्पश्चात् वह काष्ठ आदि के तक्षण आदि के द्वारा वस्त्र के सहाकारी साधन तुरी, वेमा आदि को सम्पादित करता है। तदनन्तर उसके सहकृतों के द्वारा वस्त्र के अन्तरंग साधन तन्तुओं के द्वारा वह वस्त्र को साधता है।

इस प्रकार मोक्ष में साधनीय (अथवा मोक्ष के साक्षात् साधनभूत ब्रह्मविद्या में साधनीय) मुमुक्षु के भी यथोक्त तीन प्रकार के साधन आवश्यक होते हैं। मोक्ष के प्रति अन्तरंग साधन श्रवण, मनन, निदिध्यासन होते हैं। सहकारी साधन श्रवण आदि के अनुष्ठान काल में सदा होते हैं- साधन चतुष्टय, इस नाम से शास्त्र में चार प्रसिद्ध साधन हैं। वे हैं- 'नित्यानित्यवस्तुविवेक, इहामुत्रर्थफलभोगविराग, शमादिषट्क-सम्पत्ति और मुमुक्षुत्व।' (जैसे चैत आदि प्रसिद्ध हैं- अमानित्व, अद्वैष्टा सर्वभूतानाम्, शान्तो दान्त, उपरत इत्यादि शास्त्रवाक्यों

के द्वारा)। परम्परा साधन तो जिन साधनों के द्वारा साधनचतुष्टय रूप सहकारी साधन सिद्ध होते हैं वे ही है। यथा- कर्मयोग, भक्तियोग, जप, उपासना, ध्यान, यज्ञ, दान, तप इत्यादि (गीता उपविशयासने युञ्ज्याद् योगम् आत्मविशुद्धये, यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कायमेव तत् यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्) परम्परा साधनों को कभी बहिरंग साधन भी कहा जाता हैं

(तीन सोपान, उसके ऊपर ब्रह्मविद्या का उदय और उससे मोक्ष- ऐसा कोई भी चित्र)

एवं मोक्ष के तीन प्रकार के साधन सोपान क्रम से किस कारण से कहे जाते हैं, ऐसा संशय हो। वहाँ यहाँ समाधन है- कर्मयोग, ध्यानयोग इत्यादि के परम्परा साधनों का जो अनुष्ठान करता है, उसका ही अन्तःकरण शुद्ध होता है। अन्तःकरण शुद्ध होने पर साधन चतुष्टय रूप उसका सहकारी साधन सम्पन्न होता है। शुद्ध अन्तःकरण और साधन चातुष्टय सम्पन्न व्यक्ति ब्रह्मविद्या में अधिकारी अथवा योग्य होता है। यहाँ ब्रह्मविद्या में अधिकारी, इस ब्रह्म-विद्योपदेशकों के वेदान्तवाक्यों के तात्पर्य अवगमन में अधिकारी हैं, ऐसा अर्थ है। वेदान्तवाक्यों का तात्पर्यावगमन श्रवण, मनन, निदिध्यासन रूप तीन उपायों द्वारा सिद्ध होता है। उससे ब्रह्मविद्या में जो अधिकारी है, वह श्रवणादि में अधिकारी है, ऐसा अर्थ समाहित होता है। इस प्रकार कर्मयोग आदि साधनों के द्वारा अन्तःकरण की शुद्धि और साधनचतुष्टय सम्पन्न ब्रह्मविद्या में अधिकारी होकर जो श्रवण आदि करता है, वह ही ब्रह्मविद्या को प्राप्त करता है, अतः साधनों का सोपान क्रम है, ऐसा जानते हैं।

पाठगत प्रश्न 25.6

यहाँ कुछ पाठगत प्रश्न दिये गए हैं।

1. तीन प्रकार के ज्ञान-साधन कौन से हैं?
2. मोक्ष के तीन साधनों में सोपान क्रम किस कारण से स्वीकार किया जाता है?

25.7 भगवद्गीता में ज्ञानोत्पत्ति के साधनों का संग्रह

आत्मा के स्वरूप परिज्ञान से ही मोक्ष होता है, ऐसा श्रीमद्भगवद्गीता मे श्रीकृष्ण ने बार-बार हमें उपदेश दिया है। आत्मा का स्वरूप तो ब्रह्म है। उससे मोक्ष की जो आकांक्षा करता है, उसके द्वारा ब्रह्म ज्ञेय है। मुमुक्षु द्वारा ब्रह्म ही ज्ञेय है, इस युक्ति से ब्रह्मज्ञान से ही मोक्ष होता है, यह सिद्ध है। ऐसी स्थिति में अन्य शंका समुत्पन्न होती है- यह ब्रह्मज्ञान कैसे प्राप्तव्य है, इस ब्रह्म-ज्ञान के क्या-क्या साधन हैं? इस शंका निवारण के लिए श्रीकृष्ण भगवान श्रीमद्भवगद्गीता के तेरहवें अध्याय में ब्रह्म-ज्ञान के साधनों का संग्रहीत करके उपदेश दिया है। इन साधनों के अभ्यास से हमारा अन्तःकरण शुद्ध होता

है। शुद्ध अन्त:करण साधन चतुष्टय द्वारा समुत्पन्न होता है। शुद्ध अन्त:करण युक्त साध के जब आत्मस्वरूप ब्रह्म के बोधक वेदान्त वाक्यों को सुनते हैं, उसके अन्त:करण में ब्रह्मज्ञान समुद्भूत होगा, और उससे वह संसार से मुक्त होगा। तथा भगवान द्वारा प्रोक्त ज्ञान के साधन है-

अमानित्वम् अदम्भित्वम् अहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यम् आत्मविनिग्रह:॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् अनहङ्कार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदु:खदोषानुदर्शनम्॥
असक्तिरनभिष्वङ्ग: पुत्रदारगृहादिषु।
नित्यञच समचित्तत्वम् इष्टानिष्टोपपत्तिषु॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वम् अरतिर्जनसंसदि॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम् अज्ञानं यदतोऽन्यथा॥

(श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय : 13, श्लोका : 7-11)

ये अमानित्व आदि जिससे ज्ञान के साधन होते हैं उससे ये श्रीभगवान् के ज्ञान शब्द के द्वारा अभिहित हैं- एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम्। यथा लोक में आयुर्वै घृतम् ऐसा प्रयोग होता है तथा यह भी प्रयोग सम्भव होता है। घृत के भक्षण (खादन) से आरोग्य होता है और उससे आयु वर्द्धन होता है। एवं घृतसेवन से आरोग्यता और उससे दीर्घ आयु प्राप्त होती है, अत: आयुवृद्धि का साधन घृत आयु के समान ही है, ऐसी प्रशंसा की जाती है। इसी प्रकार यहाँ भी अमानित्व आदि साधनों के द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है, यह हेतु का अमानित्व आदि ज्ञान ही है, ऐसा भगवान द्वारा प्रशस्ति है।

अमानित्व आदि ब्रह्म-ज्ञान के साधनों का सामान्य अर्थ नीचे प्रदर्शित है-

अमानित्व - 'आत्मन श्लाघनम् मानित्वम्'। उसका अभाव अमानित्व है।

अदम्भित्व - स्वधर्म प्रकटीकरण दम्भित्व है। उसका अभाव अदम्भित्व है।

अहिंसा - प्राणियों की पीड़ा हिंसा है। उसका अभाव अहिंसा है।

क्षान्ति - परापराधप्राप्ति में अविक्रिया।

आर्जव - ऋजुभाव अवक्रत्व।

आचार्योपासन - मोक्ष साधनोपदेष्टा आचार्य। उसका शुश्रूषादि प्रयोग द्वारा सेवन।

शौच - शुचिता। शारीरिक मलों का मिट्टी-जल से प्रक्षालन। मानसिक मलों का राग आदि का प्रतिपक्ष भावना से अपनयन।

स्थैर्य - स्थिरभाव। मोक्षमार्ग में ही कृत अध्यवसाय।

आत्मविनिग्रह – मन और अन्द्रियों का विनिग्रह। यहाँ आत्म शब्द से विशिष्ट मन और इन्द्रियादि कहलाते हैं।

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् – इन्द्रियविषयों और भोगों में विरागभाव।

अनह्यार – अह्यार का अभाव।

जन्म, मृत्यु, जरा, व्याधि, दु:ख – दोष का अनुदर्शन-जन्म, मृत्यु, जरा और व्याधि दु:खरूप दोष है, ऐसा अनुदर्शन। जन्म दु:ख है, मृत्यु दु:ख है, जरा दु:ख है, व्याधि दु:ख है, ऐसा अनुचिन्तन।

आसक्ति – भाग विषयों में सन्नरहितता।

पुत्रदारगृह आदि में अनभिष्वन्न – पुत्रों में, दार (पत्नी) में, गृह में, दासवर्ग आदि में अनासक्ति।

इष्टानिष्टोपपत्तिषु नित्यं समाचित्तत्वम् – इष्टों की और अनिष्टों की उपपत्ति में समचित्तत्व। उपपत्ति समप्राप्ति है। समचित्तत्व तुल्यचित्तता।

मयि अनन्ययोगेन

अव्यभिचारिणी भक्ति: – ईश्वर में अनन्ययोग से निश्चल भक्ति। 'भगवान से परे अन्य नहीं है, अत: वही हमारी गति है', इस प्रकार की निश्चित बुद्धि अनन्ययोग है।

विविक्तदेशसेवित्वम् – शुद्ध देश में वास।

जनसंसदि अरति: – संसार शून्य अविनीताओं की संसदि अरमण।

आध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् – आत्मस्वरूप विषयक ज्ञान में स्थिरता।

तत्त्वज्ञानार्थ दर्शनम् – तत्त्व ज्ञान के अर्थ की आलोचना। तत्त्व ज्ञान का अर्थ अथवा फल है-मोक्ष। मोक्ष के विषय में चिन्तन ही तत्त्व ज्ञानार्थ दर्शन है।

पाठसार

संसार रूपी बन्धन आत्मस्वरूप ब्रह्म के अज्ञान द्वारा ही उत्पन्न हुआ। उपनिषद्-मीमांसा रूप वेदान्तशास्त्र हमें आत्मस्वरूप ब्रह्म का बोध कराता है। उसके कारण हम में से जिसे संसार से समोक्ष की इच्छा होती है, वह साधक गुरू के पास विधिपूर्वक जाकर वेदान्तशास्त्र पढ़कर ब्रह्म को जानने के लिए अग्रसर होता है। ब्रह्मज्ञान, ब्रह्मविषयक अज्ञान को नष्ट करता है। अज्ञान के नष्ट होने पर साधक की संसार से निवृत्ति होती है और

टिप्पणी

उससे आत्मानन्द प्राप्त होता है। किन्तु यह संसार निवृत्ति है, ऐसा जाना जाता है, और परमानन्द की प्राप्ति कंठ-चात्रीकर न्याय के द्वारा प्राप्त की ही प्राप्ति है, ऐसा जाना जाता है। अज्ञान से अनिवृत्त की ज्ञान से निवृत्ति, आन से अप्राप्त की ज्ञान से प्राप्ति ऐसा अर्थ है। उसके कारण मोक्ष नित्य है। अज्ञान ही उसका प्रतिबंध है, अतः मुमुक्षु के द्वारा ज्ञान के लिये ही यत्न करना चाहिये।

ब्रह्मज्ञान से ही मोक्ष होता है। उससे मोक्ष का साक्षात् साधन ब्रह्मज्ञान ही है। ब्रह्मज्ञान उत्पादक होने से अन्य साधन भी मोक्ष साधन कहलाते हैं। ये ब्रह्मज्ञान की उत्पत्ति के साधन तीन (3) प्रकार के हैं- परंपरा साधन, सहकारी साधन और अंतरंग साधन चित्त शुद्धि के साधन परंपरा साधन होते हैं। अंतरंग साधन के अनुष्ठान में साधक के सहकारी साधन सहकारी साधन कहलाते हैं। सहकारी साधनों से युक्त ब्रह्मविद्या के अधिकारी साधक के द्वारा अनुष्ठान करने योग्य साधन अंतरंग साधन हैं। अंतरंग साधन के अनुष्ठान द्वारा ब्रह्मविद्या उत्पन्न होती है।

पाठान्त प्रश्न

इसमें परीक्षा-उपयोगी प्रदृष्टव्य प्रश्न दिये जाते हैं-

1. वेदान्तशास्त्र क्या है?
2. वेदान्तशास्त्राध्ययन का क्या प्रयोजन है।
3. मोक्ष क्या है और वह कैसे सिद्ध होता है?
4. मुमुक्षु ब्रह्मज्ञान कैसे प्राप्त करता है?
5. मोक्ष नित्य है, ऐसा किस कारण से कहते हैं?
6. रज्जु-सर्प न्याय को व्याख्यात करें?
7. कण्ठचामीकर न्याय को व्याख्यात करें?
8. ब्रह्मविद्या के उत्पादक मोक्ष साधनों का वर्णन करें?
9. मोक्ष साधनों में सोपानक्रम कैसे योगित है, व्याख्यात करें।
10. अमानित्व आदि साधन क्या हैं?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर - 25.1

1. जन्म, जरा, मरण आदि चक्र ही संसार कहलाता है। आत्मस्वरूप विषयक अज्ञान संसार का कारण है।

2. आत्मस्वरूप विषयक अज्ञान से ही संसार उत्पन्न हुआ। जब आत्मविषयक ज्ञान होगा तब संसार कारण वह अज्ञान नष्ट होगा। अज्ञान के नष्ट होने पर संसार भी निवृत्त होगा। आत्म विषयक ज्ञान ही ब्रह्मज्ञान भी कहलाता है। उसके कारण ब्रह्मज्ञान से ही संसार की निवृत्ति होती है।

3. वेदान्तशास्त्र उपनिषद् मीमांसा द्वारा आत्मस्वरूप ब्रह्म के बोध के लिए प्रवृत्त हुआ।

4. साधन चतुष्टय सम्पन्न ही वेदान्तशास्त्र को पढ़कर उसका तात्पर्यभूत आत्मस्वरूप ब्रह्म को जानने हेतु अग्रसर होता है। उससे साधनचतुष्टय सम्पन्न व्यक्ति ही वेदान्तशास्त्र में अधिकारी कहलाता है।

उत्तर-25.2

1. संसार के दु:ख की आत्यन्तिक निवृत्ति और परमानन्द की प्राप्ति मोक्ष कहलाता है।

2. वैषयिकानन्द अनित्य और सातिशय होता है। आत्मस्वरूपानन्द अथवा ब्रह्मानन्द नित्य और निरतिशय होता है।

3. ब्रह्मज्ञान से ब्रह्मविषयक अज्ञान की निवृत्ति होने पर मोक्ष प्राप्त है।

उत्तर-25.3

1. मन्द अन्धकार में मार्ग में रज्जु को देखकर कोई ''यह सर्प है'', ऐसा चिन्तन करके भ्रान्त होता है। जब कोई अपर (अन्य) व्यक्ति ''यह सर्प नहीं है अपितु रज्जु है', ऐसा उसको बोधित किया तब उसकी भ्रान्ति गई। तब सर्प निवृत्त हुआ, ऐसा वह कहता है। किन्तु वस्तुत: सर्प पूर्व में ही निवृत्त था। तथापि वह अनिवृत्त है, ऐसी उस व्यक्ति की भ्रान्ति थी। रज्जु ज्ञान से जब वह भ्रान्ति गई तब निवृत्त सर्प की ही निवृत्ति हुई। यह दृष्टान्त रज्जुसर्प न्याय कहलाता है। रज्जु सर्पन्याय से यह सिद्ध होता है- निवृत्त की भी निवृत्ति सम्भव होती है।

2. किसी महिला ने उसका चामीकर (स्वर्ण हार) कहीं गिरकर अप्राप्त है, इस प्रकार चिन्तन किया। जब अन्य कोई उसके कण्ठ में ही चामीकर है, ऐसा बोध कराता है, तब चामीकर प्राप्त हुआ, ऐसा वह कहती है। किन्तु वह चामीकर सदा प्राप्त ही था। उसने भ्रम से उसको अप्राप्त माना। जब ज्ञान से भ्रान्ति गई तब प्राप्त चामीकर की ही प्राप्ति हुई। यह दृष्टान्त कण्ठ-चामीकर न्याय कहलाता है। कण्ठ-चामीकर न्याय से यह सिद्ध होता है- प्राप्त की भी प्राप्ति सम्भव होती है।

3. रज्जुसर्प न्याय से निवृत्त की ही संसार के दु:ख की निवृत्ति है, कण्ठ-चामीकर न्याय से प्राप्त की ही परमानन्द की प्राप्ति मोक्ष में होती है, अत: मोक्ष नित्य है, ऐसा जाना जाता है।

4. मोक्ष नित्य है तो भी आत्मस्वरूप विषयक अज्ञान से संसार अनिवृत्त है, और ब्रह्मानन्द अप्राप्त है, ऐसा हम सोचते हैं। उसके कारण हम बद्ध हैं।

उत्तर-25.4

1. आत्मविषयक अज्ञान से संसार बंधा हुआ है। उस अज्ञान से निवृत्ति जब होती है तब संसार भी निवृत्त होता है और मोक्ष होता है। अज्ञान का निवर्तक केवल ज्ञान ही होता है। उसके कारण ज्ञान से ही मोक्ष होता है।
2. आत्मा का यथार्थ स्वरूप ब्रह्म उपनिषदों में बोधित होता है। उसके कारण आत्म ज्ञान के लिए उपनिषद् का अर्थ ज्ञेय है। उस अर्थ का निर्णय करने हेतु उपनिषद्-मीमांसा रूप अद्वैत वेदान्तशास्त्र प्रवृत्त हुआ। उसके कारण मुमुक्षु द्वारा आत्मज्ञान को वेदान्तशास्त्र से प्राप्त किया जा सकता है।
3. ज्ञान के द्वारा जो मुक्त है, वह नित्य और निरतिशय ब्रह्मानन्द को अनुभव करता है।

उत्तर-25.5

1. मोक्ष का साक्षात् साधन ब्रह्मज्ञान हैं अत एव ज्ञान के द्वारा ही मोक्ष है, ऐसा कहा जाता है।
2. मोक्ष का साक्षात् साधन ब्रह्मविद्या ही है तो भी उसकी उत्पत्ति अशुद्ध अन्त:करण में नहीं होती है। उससे ब्रह्म ज्ञान के लिये अन्त:करण की शुद्धि सम्पादनीय है। अन्त:करण में स्थित मलों की निवृत्ति के लिये ही कर्मयोग आदि साधन शास्त्र में बोधित हैं। अत: ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त सभी मोक्षसाधन अन्त:करण शुद्धि द्वारा ब्रह्मज्ञान की उत्पत्ति के लिये होते है।

उत्तर-25.6

1. जो ब्रह्मज्ञान की उत्पत्ति के साधन, मोक्ष साधन हैं, वे तीन प्रकार के हैं। वे हैं- अन्तरंग साधन, सहकारी साधन और परम्परा साधन।
2. कर्मयोग, ध्यान योग इत्यादि परम्परा साधनों का अनुष्ठान जो करता है, उसका ही अन्त:करण शुद्ध होता है। अन्त:करण के शुद्ध होने पर उसके साधन चतुष्टय नामक सहकारी साधन सम्पन्न होते है। शुद्ध अन्त:करण और साधन चतुष्टय से सम्पन्न मनुष्य ही ब्रह्म विद्योपदेशक वेदान्तवाक्यों को सुनकर आत्मस्वरूप ब्रह्म का साक्षात् करता है। इस प्रकार कर्मयोग आदि साधनों के द्वारा अन्त:करण शुद्धि और साधन चतुष्टय को सम्पादित करके ब्रह्मविद्या का अधिकारी बनकर जो श्रवण आदि करता है, वह ही ब्रह्मविद्या को प्राप्त करता है, अत: साधनों का सोपानक्रम है, ऐसा जाना जाता है।

॥पच्चीसवाँ पाठ समाप्त॥